Success Story

M/S Yuvraj Medico Pvt.Ltd
CMYUVA20219955558844

Manish Ranjan Vishwas

2021-22
Trade Name –(Disposable Diaper And Sanitary Napkin)

85,00000
PER MONTH CURRENT TURNOVER

10,00,000
Support from MMUY

मैं स्नातक पास था मैं बेरोजगार था मुझे परिवार चलाने के लिए रोजगार करना था मेरे दिमाग में बहुत साल से चल रहा था की मैं सेनेटरी नैपकि का यूनिट लगाने के लिए मेरे पास पैसा नहीं था की मैं लगाउ एक दिन मेरे एक मित्र ने बोला की एक कंपनी का निर्माण करो उद्योग विभाग बिहार सरकार द्वारा मुख्यमंत्री उदमी योजना निकलने वाला है उसका आवदेन कर देना अगर तुम्हारा भाग्य साथ दिया तो तुम सिलेक्टेड हो जाओगे जिस तरह से बोलै मैंने किया मैंने आवदेन किया मेरा आवदेन सफल हो गया मुझे तीन किस्तों मैं पैसा मिला उद्योग अस्थापित करने के उपरांत मेरा आर्थिक इस्थिति में काफी सुधार हुवा ा इसके साथ ही मैं अपने उद्योग में ४ लोगो को रोजगार दिया उन ४ परिवारों का भरण पोसन भी मेरे उद्योग से हो रहा है आज मैं और मेरे उद्योग से जुड़े सभी लोग काफी खुश है

गांव वालों को समझाने में करना पड़ा स्ट्रगल

यह बात मेरे लिए यह रोंगटे खड़े कर देने जैसा था । उस गांव की महिलाओं के स्वास्थ को लेकर मुझे चिंता बढ़ गई थी। मगर हमको तब और भी हैरानी हुई जब उन्हें इस बात का अहसास हुआ कि गाँव की महिलाओं को इस बात से कोई दिक्कत नहीं थी की महीने के 5 दिन उन्हें पेनफुल तरीके से गुजारने पड़तें हैं । मैंने महिलाओं को समझाया कि पीरियड्स में रेत का इस्तेमाल करने से उन्हे health issues हो सकते हैं और उन्हें पैड्स यूज करने को कहा। मगर वह pads को शहरी वस्तु कह कर समझने से इंकार कर देतीं।'

नहीं मान हार

मैंने हार नहीं माना । मैंने गांव की औरतों से इस पर खुल कर बात किया । इस बातचीत में उन्होंने गांवों के मर्दों को भी शामिल किया। वह कहते हैं, ' मैंने सोचा कि क्यों न इन औरतों को इन्हीं की भाषा में समझाया जाए। गाँव की औरतें गीत गा कर काम करती हैं इसलिए मैंने उनके लिए गीत लिखे और समझाने की कोशिश किया ।' अच्छी बात यह था कि इस बार मेरा बात गाँव की महिलाओं को समझ आगाई।

मिला सफलता

गांव के पुरुष अभी भी स्वाति से नराज थे। वह कई बार स्वाती और उनसे जुड़ी महिलाओं को परेशान भी करते थे। इसलिए मैंने एक यूनिट तैयर करने के लिए जहां आकर गांव की महिलाएं पैड्स बना सकती थी । अपनी सोच के मुताबिक वर्ष 2022 में मैंने पहला यूनिट रोहतास के करगहर में गाँव में शुरू कर दिया । पैड्स बनने लगे और इस पैड्स का नाम रखा गया 'सफल '। इन पैड्स को महिलाएं यूज भी करने लगीं । मगर यह राह अभी आसान नहीं थी। यूज्ड पैड को डिसपोज ऑफ करना गांव की महिलाओं के लिए चुनौती बन चुका था। मगर इस कठिन डगर पर मनीष रंजन विश्वास का साथ दिया उनके अंकित लुका और हमसफ़र अनामिका कुमारी ने।

'हमने 'सफल ' के नाम से सेनेटरी नैपकिन बनाने शुरू कर दिये थे। महिलाओं को अच्छी सेहत के साथ रोजगार भी मिल गया था। मगर गाँव के मर्दों को डर था कि इस्तेमाल किए पैड्स गाँव में फसल न खराब करने लगें। उनका डर सही था। खराब पैड्स गाँव की मिट्टी को खराब कर सकते थे। '

वर्तमान समय में मेरे साथ लगभग 4 महिलाएं जुड़ी हैं और अच्छी बात तो यह है कि अब महिलाओं के पति भी सेनेटरी नैपकिन बनाने में उनकी मदद करते हैं। इस तरह महीने भर में 1 यूनिट लगभग 85000 पैड्स तैयार कर लेती है। मनीष रंजन विश्वास कहती हैं, 'सेनेटरी नैपकि के 1 पैक में 7 पैड्स होते हैं और इस पैक की कीमत 25 रूपय होती हैं।

वर्ष 2022, 6 दिसंबर को मैंने करगहर में एक यूनिट खोला हु । यहां अभी 4 महिलाएं काम कर रही हैं। रोहतास करगहर में जगह-जगह ' सफल ' पैड्स के कि ऑस्क भी आपको नजर आ जाएंगे। यहां आपको एक पैड 2 रुपए का मिल जाएगा। इन पैड्स की बेस्ट बात यह है कि यह ऐसी चीजों से तैयार किए गए हैं जो वातावरण को नुकसान नहीं पहुंचाते।